श्रम
कहानी
नारायण राव

श्रम

मानवीकृत खदानों में श्रमिकों की संख्या अधिक होती है. सामान्यतः सभी श्रमिक छोटी-छोटी बस्तीयों में रहते है. ऐसी ही एक लौह अयस्क खदान की घटना का वर्णन कर रहा हूँ जिसके एक छोटे से बस्ती में कुछ श्रमिक रहते थे.

बस्ती में रहने वाले अधिकांश खदान मजदूर थे और कुछ छोटे-मोटे रोजगारवाले. उसी बस्ती में इन्दू नाम की एक लडकी रहती थी. उसके पिता सेवकराम और माता रामप्यारी दोनों खदान में दैनिक वेतन भोगी मजदूर थे. वे दोनों एक ही जगह मजदूरी करते थे. रामप्यारी और सेवकराम की एक ही संतान है, इन्दू. वो है प्यारी सी, सुन्दर सी और समझदार. दोनों इन्दू से बहुत प्यार करते थे.

रोज सुबह भोर होने से पहले इन्दू के माता-पिता उठ जाते थे. दैनिक क्रियाओं से निपटने के बाद उसकी माता घर की साफ-सफाई में लगे रहती थी कि इन्दू बिस्तर छोड़ उठ खडी हो जाती थी और अपने माता का हाथ बटाने लगती थी. उधर सेवकराम खदान जाने के लिए तैयारी में लगा रहता था. इधर दोनों माँ- बेटी मिलकर भोजन बनाने में जुट जाते थे. इस तरह इन्दू का दिनचर्या प्रारंभ होता था. सुबह भोजन तैयार होते ही, उसके माता-पिता भोजन करने बैठ जाते थे. इधर इन्दू उनके लिए दोपहर के खाने का डिब्बा तैयार कर देती थी. दोनों घर से भगवान की आराधना कर खदान जाने के लिए निकलते थे. उसकी माता एक झावडी में खाने के डिब्बे के साथ-साथ पंजा व कुछ अन्य समान रख लेती थी. उसके पिता फावड़ा और

कुदाली ले लेते थे. रोज सुबह सात बजे से पहले सेवकराम और रामप्यारी खदान जाने के लिए घर से रवाना होते थे. उनके जाने के बाद इन्दू नहा-धो कर पहले पेट पूजा करती थी और उसके बाद पढ़ाई करने बैठ जाती. वो बारहवीं कक्षा की छात्रा थी. और पढ़ने-लिखने में तेज थी. हमेशा स्कूल में अव्वल आती थी.

इन्दू रोज स्कूल जाती थी. दिन भर स्कूल में पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद में अपने सहपाठियों के साथ मस्त रहती थी. थके-हारे शाम को जब घर वापस आती थी. तो आराम नहीं करती थी. धर में झाड़ू करती थी और बर्तन साफ़ करती थी. संध्या, भगवान की पूजा-अर्चना के बाद, दिया जलाकर घर में रोशनी करती थी. उसके बाद अपने माता-पिता की राह देखते हुए द्वार पर ही जमे रहती थी. कभी-कभी सेवकराम और रामप्यारी को घर पहुँचने में देर हो जाती थी. तो इन्दू उनकी राह देखते हुए गली के छोर तक पहुँच जाती थी. अक्सर खदान से लौटते समय सेवकराम कुछ न कुछ खाने की चीजे लेकर आता था. खाली हाथ कभी नहीं आता था. उसे अच्छी तरह मालूम रहता था कि उसकी प्यारी बेटी इन्दू, घर पर उसकी राह देख रही होगी.

उनके घर लौटने पर इन्दू उन्हें देखकर खुशी से झूम उठती थी. वे आपस में बाते करते हुए रात का खाना बनाते थे. ढेर सारी बाते करते हुए खाना खाते थे. थोड़ी देर बाद सो जाते थे. इस तरहा उनका जीवन सुखमय बीत रहा था.

एक दिन, रोज की तरह रामप्यारी और सेवकराम खदान चले गए. इन्दू भी स्कूल चली गयी. उस दिन स्कूल में

अर्धवार्षिक परीक्षा के परिणाम घोषित होने वाले थे. सारे विद्यार्थी बेसब्र थे. कुछ समय बाद परिणाम घोषित हुआ. इस बार इन्दू अपनी कक्षा के बजाय सारे स्कूल में प्रथम आयी. उसके मित्र उसे बधाईयाँ देने लगे. कुछ शिक्षकों ने भी बधाईयाँ दी. सारा दिन बधाईयों और मौज-मस्ती में गुजरा. शाम को वो खुशी-खुशी घर लौटी. घर में दिया-बाती जलाने के बाद, बड़ी बेसब्री से अपने माता-पिता का इन्तजार करने लगी. क्योंकि उन्हें ये खुशखबरी जो देनी थी. वे खुश होकर कोई अच्छा सा तोहफा देंगे.

काफी समय हो गया. परन्तु इन्दू के माता-पिता नहीं लौटे. वो उनकी राह देखते हुए गली के छोर तक जा पहुँची. पर रामप्यारी और सेवकराम कहीं नजर नहीं आ रहें थे. वो सोची कि उसे ही जल्दी है इसलिए काफी समय हुआ जैसा महसूस हो रहा है. अभी उनके आने का समय नहीं हुआ होगा. यह जानकार वापस घर आयी. थोड़ी देर बाद रात घिर आयी. घर में बैठे-बैठे इन्दू के मन में तरह-तरह की अनहोनी बातें जन्म ले रही थी. उतने में किसी ने बाहर से इन्दू को पुकारा. वह अपने पिताजी की आवाज पहचानती थी. इसलिए वह जान गयी कि ये पुकारने वाला कोई और है. फिर कौन हो सकता है, शंकित मन लिए घर से बाहर निकली. चार-पांच आदमी खड़े थे. इन्दू उन लोगों को पहचान लिया. वे सभी सेवकराम के साथ काम करने वाले थे. वे सभी इसी बस्ती में रहते थे. उतने में कुछ महिलाएं भी आयीं. वे सभी उसी बस्ती की रहने वाली थी. वे महिलाएं इन्दू को देख कर रो पडी. कुछ उससे लिपट कर होने लगी. इन्दू को कुछ समझ में नहीं आ रहा था. इन्दू के पूछने पर, रोने के अलावा कोई जवाब नहीं मिल रहा था.

उसे कुछ अनहोनी घटना के संकेत मिलने लगे. वह अपने माता-पिता के बारे में पूछी पर कोई जवाब नहीं दे पा रहा था.

कुछ ही पलों में एक ट्रक आयी. इन्दू उस ट्रक को देखते ही रोने लगी. क्योंकि उस ट्रक में केवल लाशों को ही लाया और ले जाया जाता था. इन्दू को उस ट्रक के बारे में मालूम था. ट्रक आकर इन्दू खडी हो गयी. उस ट्रक में से दो मृत शरीरों को उतारा कर इन्दू के सामने रख दिया गया. सारा मंजर देखकर इन्दू के पांव डगमगा रहें थे. उसका बदन थर-थर कांप रहा था. मृत शरीर के चेहरों पर से कपडा हटाया गया. वे मृत शरीर इन्दू के माता-पिता के थे. उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा.

खदान में एक दुर्घटना हुई. उस दुर्घटना में इन्दू के माता-पिता की मृत्यु हो गयी. खदान के श्रम कल्याण अधिकारी, खान प्रबंधक और खदान मजदूरों के मौजूदगी में, मृत रामप्यारी और सेवकराम का दाह संस्कार संपन्न हुआ. इन्दू अकेली, उदास और अजीब सा भय लिए कुछ दिनों तक शोक मानते रही. फिर उसने धैर्य के साथ काम लिया.

खदान की ओर से मिली, कंपनसेशन की रकम को बैंक में जमा कर ली. इन्दू ने रूपए सोच समझ कर खर्च करने की ठानी. परन्तु जीविका चलाने के लिए के लिए इन्दू दूसरों के घरों में काम करना पड़ा. कपड़े धोती और बर्तन मांजती और घर की साफ-सफाई, इत्यादी-इत्यादी. इसके बदले में इन्दू को खाना और कुछ रुपये मिलने लगे. इन्दू जितना मन लगाकर काम करती थी. उतने ही जतन से पढ़ाई भी

करती थी. काम के साथ-साथ उसने पढ़ाई भी जारी रखी. देखते ही देखते ही उसकी मेहनत रंग लायी. वह इंटर अच्छे अंको से पास हुयी. उसके वजह से उसे स्कालरशिप मिलने लगी. जो इन्दू के लिए काफी जरूरी था. उसके बाद इन्दू ग्रेजुवेशन करने की ठानी. उसने नाईट कालेज ज्वाइन किया. वह निरंतर मेहनत करती रही. ग्रेजुवेशन के अन्तिम वर्ष में उसने कम्पूटर कोर्स भी ज्वाइन किया. इस तरह उसने ग्रेजुवेशन और कम्पूटर कोर्स दोनों एक साथ पूरा किया.

बड़े गर्व के साथ इन्दू उसी खदान के खान प्रबंधक से मिली जिस खदान में उसके माता-पिता मजदूरी करते थे. जब इन्दू ने अपना योग्यता प्रमाण पत्र खान प्रबंधक महोदय जी को दिखलाया. तो वे फूले नहीं समाये. वह इन्दू के माता-पिता को जानते थे. वे इन्दू का साहस और मेहनत देख कर बहुत खुश हुए. वह इन्दू की नौकरी की अर्जी, सिफारिश के साथ कमेटी के पास भेज दी. कमेटी ने योग्यता के आधार पर, इन्दू को लिपिक पद पर नियुक्त किया.

इन्दू को मुख्य कार्यालय जाते देख कर सारी बस्ती झूम उठी. अब भगवान् से मै यही प्रार्थना करता हूँ कि इन्दू को कोई दुःख न हो. क्योंकि, उसने दुखो का सागर हँसते-हँसते पार किया है. इन्दू ने यह साबित कर दिखाया कि जीवन में श्रम ही श्रेष्ठ है.

समाप्त